यह सच है

विजय कुमार सिंह
बिर्गुन्ज, नेपाल

यह सच है कि मैं जो कल था वो आज नहीं,
सूखे बरगद का ठूठ हूं, सर पे पत्तों का ताज नहीं।
जीने का हुनर जमाने की बेरूखियों से सीखा है,
तुम जब चाहे छेड़ो मैं वो संगीत का साज नहीं।
तुम रोज मुझसे जता सकते हो रिश्ता बे झिझक,
रिश्ता किसी विशेष दिवस का मोहताज नहीं।
जिन संस्कारों का वाहक हूं मैं, उन संस्कारों में हर दिन,
पितृ दिवस मातृ दिवस है, केवल आज नहीं।
साल में मना लेते हैं एक दिन, किसी खास के लिए,
गैरों का चलन है यह, हमारी धरती का रिवाज नहीं।
जिनका दिन शुरू होता है मां–बाप के आशीर्वाद से
रोज मातृ–पितृ दिवस है उनका, केवल आज नहीं।